श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते

श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः

स्तुति संकीर्तन

रसिक सर्वस्व श्रीयुगलकिशोर

श्री "श्रीजी" मन्दिर, वृन्दावन

सञ्चालक—
अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य
श्री "श्रीजी" महाराज
अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ
श्रीनिम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) किशनगढ़ (राज०)

सम्पादक—
रसिकमोहनशरण शास्त्री

प्रकाशन तिथि—
हरियाली तीज—सं० २०५७
१४ वां संस्करण—१०००

न्योछावर—
५) रु० मात्र

प्रकाशक—
विष्णुप्रियाजी ज्ञानदाजी आगरा

मुद्रक—
व्रजमोहनलाल शर्मा
श्रीसर्वेश्वर प्रेस, प्रताप बाजार
वृन्दावन (मथुरा)

❀ श्रीराधासर्वेश्वरो जयति ❀

॥ श्रीमते निम्बार्कमहामुनीन्द्राय नमः ॥

अथ सक्षिप्त—

वैष्णव-सन्ध्या

प्रातःकाल स्नान कर, शुद्ध वस्त्र धारण कर, सन्ध्या करने के लिये शुद्ध भूमि पर आसन बिछाकर "ॐ आधार शक्ति कमलासनाय नमः" इस मन्त्र को पढ़कर धेनु मुद्रा दिखाते हुए आसन पर बैठें।

तदनन्तर बांयें हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ की अंगुलियों से आसन पर जल छिड़कते हुए निम्नलिखित मन्त्र से आसन-शुद्धि करे।

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोकाः देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥

इसी प्रकार निम्नांकित मन्त्र बोलकर शरीर के मस्तक आदि समस्त अङ्गों पर जल छिड़कते हुए शरीर-शुद्धि करे।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

फिर मूल मन्त्र (गुरु प्रदत्त मन्त्र) से शिखा-बन्धन करे, पुनः बाँयें हाथ में गोपीचन्दन घिसकर शलाका से उसमें षट्कोण चक्र बनाकर उसमें 'क्लीं' यह काम बीज लिखे, फिर उसको दाहिने हाथ की हथेली से ढाँककर १० बार

मूल-मन्त्र से अभिमन्त्रित करके निम्नलिखित स्थानों पर उर्ध्वपुण्ड्र (द्वादश तिलक) करे।

१. ॐ केशवाय नमः (ललाट पर)।
२. ॐ नारायणाय नमः (पेट पर)।
३. ॐ माधवाय नमः (हृदय पर)।
४. ॐ गोविन्दाय नमः (कण्ठ पर)।
५. ॐ विष्णवे नमः (दाहिनी कोख पर)।
६. ॐ मधुसूदनाय नमः (दाहिनी भुजा पर)।
७. ॐ त्रिविक्रमाय नमः (दाहिने कन्धे पर)।
८. ॐ वामनाय नमः (बायीं कोख पर)।
९. ॐ श्रीधराय नमः (बायीं भुजा पर)।
१०. ॐ हृषीकेशाय नमः (बायें कन्धे पर)।
११. ॐ पद्मनाभाय नमः (पीठ पर)।
१२. ॐ दामोदराय नमः (कटि भाग में)।

हथेली पर लगे हुए अवशिष्ट चन्दन को जल से भिगोकर 'वासुदेवाय नमः' यह मन्त्र पढ़कर शिखा (चोटी) पर पोंछ देवे।

इसके बाद दाहिने हाथ में अथवा आचमनी में जल लेकर निम्नलिखित संकल्प पढ़े।

ॐ तत्सदद्यैतस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेत-वाराहकल्पेभूर्लोके जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गत-

ब्रह्मावर्तैक-देशे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे श्रीमन्नृपति-विक्रमाद् अमुक संवत्सरे, अमुक शाके, अमुक अयने, अमुक ऋतौ, अमुक मासे, अमुक पक्षे, अमुक तिथौ, अमुकवासरे, अमुकनामा, अमुक गोत्रोत्पन्नोऽहं कायिक, वाचिक, मानसिक, सांसर्गिक दुरितोपशमनार्थं प्रातः सन्ध्योपासनं करिष्ये।

आचमन—दाहिने हाथ की हथेली में थोड़ा-थोड़ा जल लेकर निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा तीन आचमन करे।

१. ॐ केशवाय नमः २. नारायणाय नमः ३. ॐ माधवाय नमः।

प्राणायाम—प्राणायाम के तीन भेद हैं—पूरक, कुम्भक और रेचक।

१. पूरक—दाहिने हाथ के अँगूठे से नासिका के दाहिने स्वर को बन्द कर बाँयें स्वर से स्वास द्वारा वायु को धीरे-धीरे चढ़ाता हुआ 'क्लीं' इस बीज मन्त्र का १६ बार उच्चारण करे।

२. कुम्भक—दाहिने स्वर को तो अँगूठे से दबाये रक्खें फिर मध्यमा और अनामिका इन दोनों अँगुलियों से बाँयें स्वर को भी बन्द कर ले और स्वाँस को न चढ़ावे और न उतारे, ज्यों का त्यों ही रोके रहे, इसको कुम्भक कहते हैं।

इसमें उसी 'क्लीं' बीज का ६४ बार उच्चारण करे।

३. रेचक—नासिका के दाहिने स्वर से अँगूठे को हटाकर धीरे-धीरे स्वास को उतारे और उसी क्लीं मन्त्र का ३२ बार उच्चारण करे।

उपरोक्त पूरक, कुम्भक, रेचक को पहले बायीं नासिका के स्वर से करे फिर दायें स्वर की नासिका से करे।

अघमर्षण—दाहिने हाथ में जल लेकर उसको बायें हाथ से ढाँककर तीन बार मूल-मन्त्र से अभिमन्त्रित कर नासिका के दाहिने छिद्र से लगाकर मन में यह भावना करे कि मेरे भीतर जो पाप थे वे सबके सब जल में आ गये हैं, फिर 'अस्त्राय फट्' यह मन्त्र बोलकर उस जल को अपने बाँयें भाग में पृथ्वी पर झटके से छोड़े और चित्त में यह कल्पना करे कि वज्राशिला पर डालकर मैंने इन पापों का ध्वंस कर दिया।

मार्जन—बायें हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ की अँगुलियों से निम्नलिखित वाक्यों द्वारा शरीर के अङ्गों पर प्रोक्षण करे अर्थात् जल से छींटा दे।

ॐ दामोदराय नमः शिरसि ! ॐ संकर्षणाय नमः मुखे। ॐ वासुदेवाय नमः ललाटे। ॐ प्रद्युम्नाय नमः घ्राणयोः। ॐ अनिरुद्धाय नमः मुखे। ॐ पुरुषोत्तमाय नमः

नेत्रयोः। ॐ अधोक्षजाय नमः कपोलयोः। ॐ नृसिंहाय नमः श्रोत्रयोः। ॐ अच्युताय नमः नाभौ। ॐ जनार्दनाय नमः हृदये। ॐ हरये नमः पादयोः। ॐ बिष्णवे नमः हस्तयोः। ॐ उपेन्द्राय नमः सर्वाङ्गे।

भूत शुद्धि—दाहिने हाथ में अथवा आचमनी में जल लेकर—'ॐ अद्य श्रीमत्सर्वेश्वरकृष्णाराधन-योग्यतासिध्यर्थं भूतशुद्धिमहंकरिष्ये' इस वाक्य धारा से भूत शुद्धि का संकल्प करके जल छोड़ दे।

फिर कच्छप मुद्रा[1] से हृदयस्थित दीपक कर्णिका के आकार वाली जीवरूपी ज्योति को परम तेज में, अर्थात् ब्रह्माण्डस्थ सहस्रदल कमल में स्थित परमात्मा में लगाकर पृथ्वी आदि २५ तत्त्वों[2] को उसी में लीन मानकर 'यं' इस वायु बीज को १६ बार जपते हुए नासिका के बांयें स्वर से स्वांस चढ़ावे। फिर उसी 'यं' का ६४ बार जप करते हुये नासिका के दोनों स्वरों को बन्द कर स्वाँस रोके। उस समय मन में ऐसी भावना करनी चाहिये कि अब मेरा

१—बायें हाथ को औंधा करके दाहिने हाथ को भी उस पर औंधा रखिये दोनों हाथों की तर्जनियों से कनिष्ठिकाओं को जोड़कर नीचे की ओर कर लीजिये तथा मध्यमा और अनामिकाओं को सीधी रखिये, कच्छप मुद्रा बन जायगी।

२—मूल प्रकृति, पञ्चमहाभूत, पञ्चतन्मात्रा, दश इन्द्रियाँ और मन, बुद्धि, चित्त, अहङ्कार ये ही २५ तत्त्व हैं।

यह प्राकृत शरीर वायु के द्वारा शोषण किया गया। फिर उसी वायु बीज 'यं' को ३२ बार उच्चारण कर धीरे-धीरे श्वास को उतारे।

फिर देह में स्थित दूषित भावना को नष्ट करने वाले रक्त वर्ण अग्नि बीज 'रं' इस मन्त्र का १६ बार जप करते हुये नासिका के दाहिने स्वर से स्वाँस को चढ़ावे। फिर दोनों स्वरों को बन्द कर उसी 'रं' बीज का ६४ बार जप करता हुआ कुम्भक करे और देह में स्थित दूषित वृत्तियों को नष्ट हो जाने की भावना करे। तदनन्तर उसी 'रं' बीज को ३२ बार जाप करते हुये स्वाँस को उतार दे।

इसके पश्चात् श्वेत वर्ण वाले चन्द्र बीज 'ठं' इस मन्त्र को १६ बार जपते हुए नासिका के दाहिने स्वर को बन्द कर बायें स्वर से धीरे-धीरे स्वाँस चढ़ावे और उस बीज के देव ललाट देशीय चन्द्रमा में लीन होने की भावना करे। फिर शुक्ल वर्ण वाले वरुण बीज 'वं' को ६४ बार जपते हुए कुम्भक करे, उस समय अमृतमयी वृष्टि की भावना कर यह कल्पना करे कि अब यह शरीर भगवान् की सेवा के योग्य संशुद्ध हो गया। पश्चात् पीले वर्ण बाले पृथ्वी बीज 'लं' इस मन्त्र को ३२ बार जपते हुए नासिका के दाहिने स्वर को खोलकर धीरे-धीरे स्वाँस को उतारे। फिर निम्नलिखित श्रीगोपाल गायत्री द्वारा करन्यास, अङ्गन्यास आदि करे।

ॐ गोपालाय-अगुष्ठाभ्यां नमः। विद्महे-तर्जनीभ्यां नमः। गोपीजन वल्लभाय-मध्यमाभ्यां नमः। धीमहि-अनामिकाभ्यां नमः। तन्नःकृष्णः-कनिष्ठिकाभ्यां नमः। प्रचोदयात्-करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः।

ॐ गोपालाय-हृदयाय-नमः। विद्महे-शिरसे स्वाहा। गोपीजन वल्लभाय-शिखायैवषट्। धीमहि-कवचायहुम्। तन्नःकृष्णः-नेत्रत्रयाय वौषट्। प्रचोदयात्–अस्त्राय फट्।

*गायत्री-आवाहन–दोनों हाथों की अञ्जली जोड़ बड़े नम्र भाव से आवाहन मन्त्र द्वारा गायत्री का आवाहन करे अर्थात् बुलावे। मानसिक भावना से एक सुन्दर आसन की कल्पना करते हुये उस पर पधरावे।

---

*गायत्री का आवाहन करके निम्नलिखित ये २४ मुद्रायें हाथों से बना-बनाकर दिखावे, पश्चात् जप करे।

सुमुखं संपुटं चैव विततं विस्तृतं तथा।
द्विमुखं त्रिमुखं चाथ चतुष्पंचमुख तथा॥
षण्मुखाऽधोमुखं चैव व्यापकाञ्जलिक तथा।
शकटं यमपाशं च ग्रन्थितं चोन्मुखोन्मुखम्॥
प्रलम्बं मुष्ठिकं चैव मत्स्य-कूर्मवराहकम्।
सिंहाक्रान्त महाक्रान्तं मुद्गरं पल्लवं तथा॥

जप के अनन्तर—

सुरभी-ज्ञान-वैराग्य योनिः शङ्खोऽथ पङ्कजम्।
लिङ्गं निर्वाणकं चैव जपान्तेऽष्टौ प्रदर्शयेत्॥

उपरांकित आठ मुद्रायें दिखाकर विसर्जन करे।

गायत्री आवाहन मन्त्र—

आगच्छ वरदे देवि ! त्रिपदे कृष्णवादिनि ।
गायत्रिछन्दसां मातः कृष्णयोनि नमोऽस्तु ते ।।

तदनन्तर श्रीगोपाल गायत्री का यथावकाश जप करे।

जप के अनन्तर निम्नलिखित मन्त्र से गायत्री का विसर्जन अर्थात् जिस प्रकार बुलाया उसी प्रकार पधारने के लिये भी बड़े नम्र भाव से प्रार्थना करे ।

उत्तमे शिखरे जाता भूम्यां पर्वतमूर्धनि ।
ब्राह्मणेभ्योऽभ्यनुज्ञाता गच्छ देवि यथासुखम् ।।

सूर्य्यार्घ्य प्रदान—हाथ में पुष्प लेकर सूर्य-मण्डल-स्थित श्रीसर्वेश्वर कृष्ण प्रभु का निम्नलिखित श्लोक द्वारा ध्यान करे ।

ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती, कृष्णः सरसिजासनसन्निविष्टः । केयूरवान् मकरकुण्डलवान्किरीटी—हारी-हिरण्मयवपुर्धृतशङ्खचक्रः ।

इसके अनन्तर चाँदी, ताँबा आदि के स्वच्छ अर्घ्यपात्र को चन्दन पुष्पादि युक्त जल से पूरित कर मूल (श्रीगुरु प्रदत्त) मन्त्र का उच्चारण करके 'सूर्यमण्डलस्थाय सर्वेश्वर श्रीकृष्णाय इदमर्घ्यं समर्पयामि' यह बोलकर तीन बार अर्घ्य श्रीसूर्यदेव को अर्पण करे ।

क्षमा प्रार्थना

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर ! । यत्पूजितं मया देव ! परिपूर्णं तदस्तु मे ।

श्रीमुकुन्द (शरणागति) मन्त्र-जप-विधिः

विनियोग—

ॐ अस्य श्रीमुकुन्दशरणमन्त्रस्य श्रीनारद ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीमुकुन्दपरमात्मा देवता। श्रीं, बीजम्। रमादेवी, शक्तिः। प्रपदनं कीलकम्। श्रीभगवदनुशासन-पालने विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास—श्रीनारदऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप्छन्दसे नमो मुखे। श्रीमुकुन्दपरमात्मदेवतायै नमो हृदि। श्रींबीजाय नमो गुह्ये रमादेवीशक्तये नमः पादयोः। प्रपदनं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यास—श्रीमन् अंगुष्ठाभ्यां नमः। मुकुन्दचरणौ तर्जनीभ्यां नमः। सदा मध्यमाभ्यां नमः। शरणं अनामि-काभ्यां नमः। अहं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। प्रपद्ये करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अङ्गन्यास—श्रीमन् हृदयाय नमः मुकुन्दचरणौ शिरसे स्वाहा। सदा शिखायैवषट्। शरणं कवचाय हुम्। अहं नेत्राभ्यां वौषट्। प्रपद्ये अस्त्राय फट्।

अवरोह-आरोह क्रम से पदन्यास—श्रीमन्मुकुन्दचरणौ नमो मस्तके। सदा नमो वक्त्रे। शरणं नमो हृदि। अहं

नमो नाभौ । प्रपद्ये नमो गुह्ये ।

वर्णन्यास—श्रीं मस्तके । मं लालटे । मुं भ्रूमध्ये । कुं दक्षिणकर्णे । दं वामकर्णे । चं दक्षिणनेत्रे । रं वामनेत्रे । णौं दक्षिण नासायाम् । सं वामनासायाम् । दां मुखे । शं कण्ठे । रं हृदि । णं नाभौ । मं दक्षिण कुक्षौ । हं वाम कुक्षौ । प्रं गुह्ये पं जान्वोः । द्यें पादयोः ।

ध्यान—श्यामावदातं करुणार्द्र नेत्रं, प्रसन्नवक्त्रं स्वजनैकजीवनम्, श्रीवत्सचिह्नं गलकौस्तुभं भजे, श्रीमन्मुकुन्दं प्रणतार्तिनाशकम् ।

इस प्रकार ध्यान करके धेनु मुद्रा दिखाते हुए यथाशक्ति जप करे ।

श्रीगोपाल मन्त्र-जप-विधि

विनियोग—

ॐ अस्य श्रीगोपालाष्टादशाक्षरमन्त्रस्य, श्रीनारद ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, श्रीकृष्ण-परमात्मा-देवता, क्लीं बीजम्, स्वाहा शक्तिः ह्लींकीलकम् श्रीकृष्णप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास—

नारदऋषये नमः (शिरसि)। गायत्री छन्द नमः (मुखे)। श्रीकृष्णदेवतायै नमः (हृदि)। क्लीं बीजाय नमः (गुह्ये)। स्वाहा शक्तये नमः (पादयोः)। क्लीं कीलकाय नमः (सर्वाङ्गे)।

करन्यास—

ॐ क्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः। कृष्णाय तर्जनीभ्यां नमः। गोविन्दाय मध्यमाभ्यां नमः। गोपीजन अनामिकाभ्यां नमः। वल्लभाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः स्वाहा करतलकर-पृष्ठाभ्यां नमः।

अङ्गन्यास—

ॐ क्लीं हृदयाय नमः। कृष्णाय शिरसे स्वाहा। गोविन्दाय शिखायै वषट्। गोपीजन कवचाय हुम। वल्लभाय नेत्राभ्यां वौषट्। स्वाहा अस्त्राय फट्।

पदन्यास—

क्लीं नमो मूर्ध्नि। कृष्णाय नमो वक्त्रे। गोविन्दाय नमो हृदि। गोपीजनवल्लभाय नमो नाभौ। स्वाहा नमः पादयोः।

वर्णन्यास—

ॐ क्लीं शिरसि। कृं ललाटे, ष्णां भ्रुवोः। यं

नेत्रयोः। गों कर्णयोः। विं घ्राणयोः। दां मुखे। यं कण्ठे। गों स्कन्धयोः। पीं हृदि। जं उदरे। नं नाभौ। वं गुह्ये। ल्लं आधारे। भां कट्याम्। यं उर्वोः। स्वां जान्वोः। हां पादयोः।

इस प्रकार उपर्युक्त पाँचों न्यास करके पद्मासन[1] लगाकर मेरुदण्ड[2] को सीधा रखते हुये, दृष्टि को नासिका के अग्रभाग पर जमाकर तुलसी की माला से, हाथ को हृदय के पास रखते हुए तथा मन में युगल सरकार श्रीराधासर्वेश्वर प्रभु का ध्यान करते हुए यथा शक्ति जप करे।

जप के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र द्वारा अपने किये हुये जप को भगवान् श्रीराधासर्वेश्वर के अर्पण करे।

ॐ गुह्यातिगुह्य गोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देव! त्वत्प्रसादात्त्वयि स्थितिः।।

॥ श्रीराधासर्वेश्वरार्पणमस्तु ॥

★

१—बायें पैर को दाहिने पैर की जङ्घा पर और दाहिने पैर को बायें पैर की जङ्घा पर लगाकर बैठने को पद्मासन कहते हैं।

२—पीठ की हड्डी।

❋ श्रीवृन्दावनधाम मञ्जरी ❋

प्रथम वंदि हरिव्यास पद, श्रीवृंदावन धाम।
महिमा मंजरि लिखत हौं, पुनि भज स्यामा स्याम ।।
स्यामा स्याम बिहार निज, वृंदाविपिन उदार।
अर्ब खर्ब बैकुंठ को, गर्व मिटावन हार ।।
जै वृंदावन धाम निज, सकल लोक सिरताज।
सर्वेश्वर सर्वेश्वरी, तहाँ करत जुवराज ।।
अवधादिक हरिधाम को, फल बैकुंठ कहंत।
वन रज ऊपर वारिये, सो बैकुंठ अनंत ।।
जै जै जै वृंदाविपिन, कालिन्दी तट रम्य।
हरिव्यास की कृपा बिन, सबको महा अगम्य ।।
परम सच्चिदानंद घन, श्रीवृंदावन धाम।
श्रीहरिप्रिया कृपा बिनु, को पावै वा ठाम ।।
सब तैं परे गोलोक है, तातैं पर बनराज।
दंपति सुख संपति जहाँ, श्रीहरिप्रिया समाज ।।
अज अव्यय अविनासी पद, हद बेहद लों दूर।
श्रीवृंदावन धाम है, रसिकन जीवन मूर।

जयति जयति नम जयति नम, श्रीवृंदावन बाग ।
जामें प्यारी पीय को, अविचल सदा सुहाग ॥
श्रीवृंदावन धाम की, महिमा मंजरि नाम ।
'रूपरसिक' गावै सुनै, सो पावै सुख धाम ॥
इति श्रीरूपरसिक की, रति संख्या दोहानि ।
वनपति महिमा मंजरी, पूरणता सुख खानि ॥

इति श्रीरूपरसिकदेवजी कृत श्रीवृन्दावनधाम महिमा मँजरी सम्पूर्ण ।

❀ श्रीप्रातःस्मरण–स्तोत्रम् ❀

प्रातःस्मरामि युग-केलिरसाभिशिक्तं
वृन्दावनं सुरमणीयमुदारवृक्षम् ।
सौरीप्रवाहवृतमात्मगुणप्रकाशं
युग्मांघ्रिरेणुकणिकाञ्चितसर्वसत्त्वम् ॥१॥
प्रातःस्मरामि दधिघोषविनीतनिद्रं
निद्रावसानरमणीयमुखानुरागम् ।
उन्निद्रपद्मनयनं नवनीरदाभं
हृद्यानवद्यललनाञ्चितवामभागम् ॥२॥

प्रातर्भजामि शयनोत्थितयुग्मरूपं
सर्वेश्वरं सुखकरं रसिकेशभूपम् ।
अन्योन्यकेलिरसचिह्नसखीदृगोघं
सख्यावृतं सुरतकाममनोहरं च ॥३॥

प्रातर्भजे सुरतसारपयोधिचिह्नं
गण्डस्थलेन नयनेन च सन्दधानौ ।
रत्याद्यशेषशुभदौ समुपेतकामौ
श्रीराधिकावरपुरन्दरपुण्यपुञ्जौ ॥४॥

प्रातर्धरामि हृदयेन हृदीक्षणीयं
युग्मस्वरूपमनिशं सुमनोहरं च ।
लावण्यधाम ललनाभिरुपेयमान-
मुत्थाप्यमानमनुमेयमशेषवेषैः ॥५॥

प्रातर्ब्रवीमि युगलावपि सोमराजौ
राधामुकुन्दपशुपालसुतौ वरिष्ठौ ।
गोविन्दचन्द्रवृषभानुसुतौ वरिष्ठौ
सर्वेश्वरौ स्वजनपालनतत्परेशौ ॥६॥

प्रातर्नमामि युगलांघ्रिसरोजकोश-
मष्टाङ्गयुक्तवपुषा भवदुःखदारम् ।
वृन्दावने सुविचरन्तमुदारचिह्नं
लक्ष्म्या उरोजधृतकुंकुमरागपुष्टम् ॥७॥

प्रातर्नमामि वृषभानुसुतापदाब्जं
नेत्रालिभिः परिणुतं व्रजसुन्दरीणाम् ।
प्रेमातुरेण हरिणा सुविशारदेन
श्रीमद्व्रजेशतनयेन सदाऽभिवन्द्यम् ॥८॥

सञ्चिन्तनीयमनुमृग्यमभीष्टदोहं
संसारतापशमनं चरणं महार्हम् ।
नन्दात्मजस्य सततं मनसा गिरा च
संसेवयामि वपुषा प्रणयेन रम्यम् ॥९॥

प्रातःस्तवमिमं पुण्यं प्रातरुत्थाय यः पठेत् ।
सर्वकालं क्रियास्तस्य सफलाः स्युः सदा ध्रुवाः ॥१०॥

❀ श्रीराधाष्टक–स्तोत्रम् ❀

नमस्ते श्रियै राधिकायै परायै,
नमस्ते नमस्ते मुकुन्द-प्रियायै ।
सदानन्दरूपे ! प्रसीद त्वमन्तः,
प्रकाशे स्फुरन्ती मुकुन्देन सार्धम् ॥१॥
स्ववासोपहारं यशोदासुतं वा,
स्वदध्यादिचौरं समाराधयन्तीम् ।

स्वदाम्नो दरे या ववन्धासुनीव्या,
प्रपद्ये नु दामोदरप्रेयसीं ताम् ॥२॥

दुराराध्यमाराध्य कृष्णं वशे तं,
महाप्रेमपूरेण राधाऽभिधाऽभूः ।
स्वयं नाम कीर्त्या हरौ प्रेम यच्छ,
प्रपन्नाय मे कृष्णरूपे समक्षम् ॥३॥

मुकुन्दस्त्वया प्रेमडोरेण बद्धः,
पतङ्गो यथा त्वामनुभ्राम्यमाणः ।
उपक्रीडयन् हार्द्दमेवानुगच्छन्,
कृपावर्तते कारयातो मयीष्टम् ॥४॥

व्रजन्तीं स्ववृन्दावने नित्यकालं,
मुकुन्देन साकं विधायाङ्कमालम् ।
समामोक्ष्यमाणाऽनुकम्पाकटाक्षैः,
श्रियं चिन्तयेत्सच्चिदानन्दरूपाम् ॥५॥

मुकुन्दानुरागेण रोमांचिताङ्गै-
रहं व्याप्यमानां तनुस्वेद-विन्दुम् ।
महाहार्दवृष्टया कृपापाङ्गदृष्टया,
समालोकयन्तीं कदा त्वां विचक्षे ॥६॥

यदंकावलोकं महालालसौघं,
मुकुन्दः करोति स्वयं ध्येयपादः ।

पदं राधिके ते सदा दर्शयान्त-
हृदिस्थं नमन्तं किरद्रौचिषं माम् ॥७॥

सदा राधिका-नाम जिह्वाग्रतः स्यात्,
सदा राधिकारूपमक्ष्यग्रमास्ताम् ।
श्रुतौ राधिकाकीर्तिरन्तः स्वभावे,
गुणा राधिकायाः श्रिया एतदीहे ॥८॥

इदं त्वष्टकं राधिकायाः प्रियायाः,
पठेयुः सदैवं हि दामोदरस्य ।
सुतिष्ठन्ति वृन्दावने कृष्णधाम्नि,
सखीमूर्तयो युग्मसेवानुकूला ! ॥९॥

अष्टयाम-सेवा

★ राग-ललित

गोविन्द ! मैं बंदीजन तेरा ।
प्रात समय उठि मोहन गाऊँ तो मन माने मेरा ॥
कर्तब कर्म भर्म कुल करनी, ताकी नाहिन आसा ।
तेरा नाम लिया मन मानै, हरि सुमिरन विस्वासा ॥
करूँ पुकार द्वार सिर नाऊँ, गाऊँ ब्रह्म विधाता ।
'परशुराम' जन करत वीनती, सुनि प्रभु अवगति नाथा ॥

मङ्गला—

राग–विभास

प्रात समै नव कुंज द्वार ह्वै ललिता ललित बजाई बीना ।
पौढ़े सुनत स्याम-श्रीस्यामा दंपति चतुर प्रवीन-प्रवीना ।।
अति अनुराग सुहाग परस्पर कोक कला निपुन नवीन नवीना।।
श्रीविहारीदास बलि २ बंदसि पर मुदित प्रान न्यौछावर कीना

राग–विभास

परी वलि कौन अनोखी बानि ।
ज्यों-ज्यों भोर होत है त्यों-त्यों, पौढ़त हो पट तानि ।।
आरस तजहु अरुनई उदई, गई निसा रति मानि ।
'श्रीहरिप्रिया' प्रान धन जीवन, सकल सुखन की खानि ।।

राग–बिलावल

स्यामास्याम सेज उठि बैठे अरसि परसि दोउ करत सिंगार ।
इनपहिरीवाकी मोतिन माला,उनपहिरचोवाकोनवसर हार।।
लटपट पेंच सँवारत स्यामा, अलक सँवारत नंदकुमार ।
'जै श्रीभट' जुगलकिसोर की जोरी,मेरे आँगन करत विहार ।।

राग-बिलावल

मुख सोधन सुख कुंज सदन में,
करत विहारी-विहारिन दोऊ ।
अलबेली अनिमिष अँखियन सों,
सुंदर बदन निहारनि दोऊ ।।

करि मुख बसन असन मंगल,
आरोगि अचय जल झारनि दोऊ
'श्रीहरिप्रिया' बैठाय सिंघासन,
सज आरति सहचारनि दोऊ ॥

मङ्गला आरती— राग–विलावल

मंगल कुंज में मंगल आरति, मंगल रंग रंगीली वारति ॥
मंगल मुख अरविन्द निहारति, मंगल मूरति हिय में धारति ॥
मंगल सब सहचरि अनुसारति, मंगल मोद विविध विस्तारति ॥
मंगल चौर लिये कर ढारति, मंगल मनसिज मनु मनुहारति ॥
मंगल जय २ सब्द उचारति, मंगल 'श्रीहरिप्रिया' बिचारति ॥

श्रीगोपीजनवल्लभाष्टक—स्तोत्रम्

नवाम्बुदानीक–मनोहराय, प्रफुल्लराजीव–विलोचनाय ।
वेणु-स्वनाऽऽमोदितगोकुलाय, नमोस्तु गोपीजनवल्लभाय ॥१

किरीट–केयूर–विभूषिताय, ग्रैवेय–मालामणि–रञ्जिताय ।
स्फुरल्लसत्कांचन–कुण्डलाय, नमोस्तु गोपीजनवल्लभाय ॥२

दिव्याङ्गनावृन्दनिषेविताय, स्मितप्रभाचारुमुखाम्बुजाय ।
त्रैलोक्यसंमोहन–सुन्दराय, नमोस्तु गोपीजनवल्लभाय ॥३

रत्नाद्रि–मूलालय–संगताय, कल्पद्रुमच्छाय–कृतासनाय ।
हेमस्फुरन्मण्डपमध्यगाय, नमोस्तु गोपीजनवल्लभाय ॥४

श्रीवत्सरोमावलिरंजिताय, वक्षःस्थले कौस्तुभ–भासिताय।
सरोजकिंजल्कनिभांशुकाय, नमोस्तु गोपीजनवल्लभाय ॥५

दिव्याङ्गुलीयांगुलि-रंजिताय, मयूर-पिच्छच्छवि-शोभिताय।
दिव्याम्बरालंकृत विग्रहाय, नमोस्तु गोपीजनवल्लभाय ॥६

मुनीन्द्रवृन्दैर्विधि-संस्तुताय, रक्षोगणाद् गोकुलरक्षकाय।
धर्मार्थ-कामामृत-साधनाय, नमोस्तु गोपीजनवल्लभाय ॥७

मनस्तमस्तोमदिवाकराय, भक्तेष्टचिन्तामणिसन्निधाय।
अशेष-दुर्नामजभेषजाय, नमोस्तु गोपीजनवल्लभाय ॥८

स्नान— राग-विलावल—

निज सहचरि समुझाये दोऊ। न्हान कुंज में आये दोऊ॥
मणि चौकी पधराये दोऊ। ऊबटनां उबटाये दोऊ॥
सरस सुगन्ध लगाये दोऊ। सौरभ नीर न्हवाये दोऊ॥
मृदुल अंग अँगुछाये दोऊ। पाटम्बर पहराये दोऊ॥
करन सिंगार सुहाये दोऊ। श्रीहरिप्रिया हुलसाये दोऊ॥

शृङ्गार— राग–आसावरी

नख-सिख सजि सिंगार विराजे।

लै दरपन दिखरावति सुन्दरि, कैसे आज उदार विराजे॥
देखि-देखि सोभा अँग-अँग की, उमगे उरनि अपार विराजे।
'श्रीहरिप्रिया' हितूजन जिय की, जीवन प्रान अधार विराजे॥

शृङ्गार आरती—

आरति कीजै सुंदर वर की ।
नागर नवल निकुञ्ज इन्दु जुग अखिल ताप तम हर की ॥
नव विलास मृदु हास मनोहर श्रवत सुधा सुख कर की ।
श्रीविहारीदास लोचन चकोर नित अंस प्रिया भुज धर की ॥

प्रातःकालिक श्रीभगवत्स्तुतिः—

श्रीसुदर्शनचक्रावतार आद्याचार्य श्रीभगवन्निम्बार्कमहामुनीन्द्रप्रणीत

वेदान्त—दशश्लोकी

ज्ञानस्वरूपञ्च हरेरधीनं, शरीरसंयोगवियोगयोग्यम् ।
अणुं हि जीवं प्रतिदेहभिन्नं ज्ञातृत्ववन्तं यदनन्त माहुः ॥१
अनादिमायापरियुक्तरूपं, त्वेनं विदुर्वै भगवत्प्रसादात् ।
मुक्तञ्च बद्धं किलबद्धमुक्तं, प्रभेदबाहुल्यमथापि बोध्यम् ॥२

१—जीव अनन्त (असंख्य) हैं । वे ज्ञान (प्रकाश) स्वरूप और ज्ञानवान भी हैं । शरीरों के साथ संयोग-वियोग होना ही उनका जन्म-मरण है । वे अणु (अत्यन्त सूक्ष्म) हैं और प्रत्येक देह में भिन्न-भिन्न हैं । सदा-सर्वदा हरि के आधीन रहते हैं ।

२—यह पता नहीं चलता कि जीवों के पीछे माया कब से लगी हुई है, इस अनादि माया से युक्त होने के कारण ही जीव अपने और परमात्मा के स्वरूप को नहीं पहचान सकते । जब प्रभु ही कृपा करें तब इस माया से छुटकारा हो और इन्हें स्वरूप का ज्ञान हो । वैसे तो जीव कई प्रकार के हैं, किन्तु मुक्त (नित्यमुक्त), भक्त (बद्ध) और बद्धमुक्त संक्षेप में जीवों के ये तीन भेद हैं ।

अप्राकृतं प्राकृतरूपकञ्च, कालस्वरूपं तदचेतनं मतम् ।
मायाप्रधानादिपदप्रवाच्यं, शुक्लादिभेदाश्च समेऽपि तत्र ॥३

स्वभावतोऽपास्त-समस्तदोषमशेषकल्याणगुणैक-राशिम् ।
व्यूहाङ्गिनं ब्रह्म परंवरेण्यं ध्यायेम कृष्णं कमलेक्षणं हरिम् ॥४

अङ्गे तु वामे वृषभानुजांमुदा, विराजमानामनुरूपसौभगाम् ।
सखीसहस्रैः परिसेवितां सदा, स्मरेमदेवीं सकलेष्टकामदाम् ॥५

उपासनीयं नितरां जनैः सदा, प्रहाणयेऽज्ञानतमोऽनुवृत्तेः ।
सनन्दनाद्यैर्मुनिभिस्तथोक्तं, श्रीनारदायाखिलतत्त्वसाक्षिणे॥६

३—अप्राकृत (भगवान् के चित्स्वरूप धाम आदि) प्राकृत= प्रकृति और उसका कार्य एवं काल, ये सब अचेतन माने जाते हैं। माया प्रधान, अव्यक्त आदि प्रकृति के नाम हैं, शुक्ल, रक्त, पीतवर्ण वाले सत्व, रज और तम तीनों गुण भी उसी प्रकृति के हैं।

४—जो समस्त सद्‌गुणों के समुद्र हैं किन्तु किसी भी प्राकृतिक दोष से लिप्त नहीं हैं, वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध इन चारों व्यूहों के अङ्गी हैं। कमल के समान नेत्र वाले, भक्तों के पाप दोषों को हरने वाले अतएव सेवा करने योग्य परब्रह्म श्रीकृष्ण का हम ध्यान करते हैं।

५—उन (प्रभु) के समान ही सौन्दर्य माधुर्ययुक्त (उनके) बायें अङ्ग में विराजमान हजारों सखियों से सेवित, समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाली उन श्रीकिशोरी (राधा) जी का हम स्मरण करते हैं।

६—इन श्रीराधाकृष्ण युगलकिशोरात्मक परब्रह्म की निरन्तर उपासना करते रहना चाहिये। उनके ध्यान मात्र से अज्ञानतम अविद्या की अनुवृत्ति क्षीण हो जाती है। हमारे (श्रीनिम्बार्काचार्य

सर्वं हि विज्ञानमतो यथार्थकं, श्रुतिस्मृतिभ्यो निखिलस्य वस्तुनः ।
ब्रह्मात्मकत्वादिति वेदविन्मतं, त्रिरूपताऽपि श्रुतिसूत्रसाधिता ॥७

नान्या गतिः कृष्णपदारविन्दात्, संदृश्यते ब्रह्मशिवादिवन्दितात्
भक्तेच्छयोपात्तसुचिन्त्यविग्रहादचिन्त्यशक्तेरविचिन्त्यसाशयात् ८

कृपास्य दैन्यादियुजि प्रजायते, यया भवेत्प्रेमविशेषलक्षणा ।
भक्तिर्ह्यनन्याधिपतेर्महात्मनः सा चोत्तमा साधनरूपिकाऽपरा ॥९

के) परम गुरु श्रीसनकादिकों ने अखिल तत्वज्ञ गुरुदेव श्रीनारदजी को यही सदुपदेश दिया था ।

७—जड़-चेतन रूप दृश्यमान यह समस्त विश्व विज्ञान (ब्रह्म) रूप ही है, ऐसा शास्त्रों में कहा गया है । ब्रह्मात्मक होने से ही यह संसार यथार्थ (सत्) भी है । श्रुति और सूत्रग्रन्थों में भोक्ता, भोग्य, और प्रेरक रूप से इस विश्व की त्रिरूपता भी यथार्थ ही समझना चाहिये ।

८—जिनकी शक्ति और आशय का किसी को पता ही नहीं लग सका, फिर भी वे भक्तों की इच्छा के अनुसार अनेक अवतार धारण करते हैं । जिनको ब्रह्मा, शङ्कर आदि समस्त देवता वन्दना करते हैं, उन श्रीराधाकृष्ण के चरण-कमलों के अतिरिक्त दुःखी जीवों को और कोई सहारा नहीं ।

९—जिसमें दीनता (विनम्रता) आदि गुण हों उसी पर वे प्रभु कृपा करते हैं । उनकी कृपा से ही अनन्याधिपति श्रीसर्वेश्वर प्रभु की प्रेम विशेष लक्षणा भक्ति मिल सकती है, उसी को उत्तम-भक्ति कहते हैं । श्रवण-कीर्तनादि साधन रूपा भक्ति, अपरा भक्ति कहलाती है ।

उपास्यरूपं तदुपासकस्य च, कृपाफलं भक्तिरसस्ततः परम।
विरोधिनोरूपमथैतदाप्ते ज्ञेया इमेऽर्था अपि पञ्च साधुभिः ॥१०

भोजन— राय-सारंग

भोजन कुंज में आये दोऊ, भोजन करत सुहाये री।
हितू सहेली हित चित अनुसरि, करि आदर पधराये री॥
विधिपूर्वक बैठे आसन पर, अंग-अंग सचुपाये री।
'श्रीहरिप्रिया' आरोगत रुचिसों, विविध भोग मन भाये री॥

भोजन करत लाड़िली लाल।
रतन जटित कंचन चौकी पर,
आनि धर्यो सहचरि भरि थाल॥
छप्पन भोग छतीसों षटरस,
लेह्य, चोष्य, भक्ष्य, भोज्य रसाल।
जेंवत जाहि सराहि सरस अति,
परसत रंग रँगीली बाल॥
जे जे विंजन कर पलवनि ते,
छुवति छबीली छई छवि जाल।

१०—साधुओं (उपासकों) को चाहिये कि अपने उपास्य (ब्रह्मतत्व), उपासक (साधक जीव) और भगवत् कृपा का फल, भक्तिरस तथा भगवत्प्राप्ति एवं भक्ति के विरोधी इन पाँचों के स्वरूप को अच्छी प्रकार से जान लें।

ते ते विंजन ताहि ठौर ते,
लेत छबीलो होत निहाल ॥
इहि विधि राजभोग आरोगत,
सुख संभोगत नैंन विसाल ।
'श्रीहरिप्रिया' परस्पर दोऊ,
परम प्रवीन प्रेम प्रतिपाल ॥

आचमन— इकताल

अचवन करत लाड़िली लाल ।
कंचन झारी गहत परस्पर, श्रीराधागोपाल ॥
जल मुख लेतहि हँसत हँसावत, देखत सखिन के जाल ।
राधामाधव केलि करत भये, 'श्रीभट' परत विचाल ॥

बीरी— इकताल

प्यारीजू कों बीरी खवावत मोहना ।
सुन्दर मुख सुख देख्यो चाहत, नन्द नँदन पिय सोहना ॥
जदपि न लेत लड़ैती कर तें, करत विनय परि गोहना ।
जै श्रीभट निपट दीन तन देख्यो, मुसकि दियो मुख दोहना ॥

गोपालजू कों पान खवावत भामिनी ।
परम प्रिया गुन रूप अगाधा, श्रीराधा निज नामिनी ॥
कर अँकमाल पीक मुख लसहीं, विलसहिं ज्यौं घन दामिनी ।
जै 'श्रीभट्ट' कूट मर्कत तट, खिलो सरद मनु जामिनी ॥

राजभोग आरती—

अचवन करि आरोगे बीरी, हित प्रमोदिका आरति कीरी ।
निरखि-२ छवि नैंनन नीरी, भई सखियन की अँखियाँ सीरी ।।
मुदित महा मनमोद मतीरी, जै-जै उचरति धरत न धीरी ।
'श्रीहरिप्रिया' जोरी नवलीरी, अलबेली अरु लाड़ लड़ीरी ।।

उत्थापन—

राग-गौरी

तर मेवा अरु विविध मिठाई ।
अरघ देइ सादर सुख सुंदरि,
सुंदर स्वरन थार भर ल्याई ।।
सब सब रितु की सब मामग्री,
सुखमय सरस सखी सरसाई ।
आरोगत दोऊ अलबेले,
कहि न परत हित की हितवाई ।।
अरस परस गरसा मुख देत—
दिवाबति दंपति रुचि उपजाई ।
अति रोचक अमृत अमृतावत,
बिच-बिच बहुविधि विहँसि बढ़ाई ।।
मुदित महामन मंजरि सुंदरि,
सहचरि सखी सहेलि सुहाई ।
'श्रीहरिप्रिया' निरखि-निरखि छवि,
हरखि-हरखि हियरें हुलसाई ।।

वनविहार—

फूल चले दोऊ लाल विहारी ।
फूल सखी की फूल निहारी ॥
फूली संग सोहें सहचारी ।
अप अपनी सब सोंज सँवारी ॥
कोउ कर ढुरवति चौंर सुढारी ।
कोउ मोरछलि लिये बिजनारी ॥
कोउ कर लियें डबा कोउ झारी ।
कोउ लियें सुकर मुकर मन हारी ॥
देखत-देखत बन फुलवारी ।
सुख आसन बैठे सुखकारी ॥
'श्रीहरिप्रिया' जोरी जोय जियारी ।
प्रान प्रीतमा पीय पियारी ॥

सन्ध्या आरती—

संध्या आरति करत सहेली, स्यामा स्याम गुन गर्व गहेली ।
निरखि-निरखि छवि नैंन नवेली, अँग-अँग रंग रली अलबेली ॥
सोहति उर चौसर चंबेली, रस रंजन राजति रति रेली ।
तरु सिंगार प्रेम की बेली, 'श्रीहरिप्रिया' हरत मन हेली ॥

❀ सायंकालीन श्रीभगवत्स्तुतिः ❀

श्री हंसञ्च सनत्कुमारप्रभृतीन् वीणाधरं नारदं,
निम्बादित्यगुरुञ्च द्वादशगुरुन् श्री श्रीनिवासादिकान् ।
वन्दे सुन्दरभट्टदेशिकमुखान् वस्विन्दुसंख्यायुतान्,
श्रीव्यासाद्धरिमध्यगाच्च परतः सर्वान्गुरून्सादरम् ॥१

हे निम्बार्क ! दयानिधे गुणनिधे ! हे भक्तचिन्तामणे !,
हे आचार्यशिरोमणे ! मुनिगणैरामृग्यपादाम्बुज ।
हे सृष्टिस्थितिपालक ! प्रभवन ! हे नाथ ! माधाधिप,
हे गोवर्धनकन्दरालय ! विभो ! मां पाहि सर्वेश्वर ! ॥२

कस्तूरी–तिलकं ललाटपटले वक्षःस्थले कौस्तुभं,
नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणुः करे कंकणम् ।
सर्वाङ्गे हरिचंदनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावली,
गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपालचूडामणिः ॥३

फूल्लेन्दीवरकान्तिमिन्दुवदनं बर्हावतंसप्रियं,
श्रीवत्सांकमुदारकौस्तुभधरं पीताम्बरं सुन्दरम् ।
गोपीनां नयनोत्पलार्चित-तनुं गोगोपसंघावृतम्,
गोविन्दं कलवेणुवादनपरं दिव्याङ्गभूषं भजे ॥४

हे राधे ! वृषभानुभूपतनये ! हे पूर्णचन्द्रानने !,
हे कान्ते ! कमनीय-कोकिलरवे ! वृन्दावनाधीश्वरि ।
हे मत्प्राणपरायणे ! च रसिके ! हे सर्वयूथेश्वरि,
आगत्य त्वरितं प्रतप्तनिशं मां दीनमानन्दय ॥५

हे राधे ! वृषभानुभूपतनये ! सर्वेश्वरि ! राधिके,
हे कृष्णानन-पंकज-भ्रमरिके ! कृष्णप्रिये ! माधवि ।
हे वृन्दावननागरि ! गुणगुरो ! दामोदरप्रेयसि,
हे हे श्रीललितादिक-प्रियसखि ! प्राणाधिपे पाहिमाम् ॥६

सिञ्जन्नूपुरपादपद्मयुगलां हंसीं गतिं बिभ्रतीम्,
चञ्चत्खञ्जनमञ्जुलोचनयुगां पीनोल्लसत्कन्धराम् ।
शुम्भत्काञ्चनकंकणद्युतिमिलत्पाणौ चलच्चामरं,
कुर्वाणां हरिराधिकोपरि सदा श्रीरंगदेवीं भजे ॥७

श्रीरङ्गादिसुदेविका च ललिता वैशाखिका चम्पिका,
चित्रा तुंगसखीन्दुलेखिकपरा चाष्टौ प्रधानप्रियाः ।
अन्याःसन्ति मनोहराः प्रियतमा नित्यं नवीनायिताः,
वन्दे तच्चरणारविन्दमनिशं दासोऽस्म्यहं श्रद्धया ॥८

स्वभावतोऽपास्तसमस्तदोष-
मशेष कल्याणगुणैकराशिम् ।

व्यूहाङ्गिनं ब्रह्म परं वरेण्यं,
ध्यायेम कृष्णं कमलेक्षणं हरिम् ॥९

अंगे तु वामे वृषभानुजां मुदा,
विराजमानामनुरूपसौभगाम् ।
सखी सहस्त्रैः परिसेवितां सदा,
स्मरेम देवि सकलेष्टकामदाम् ॥१०

नान्या गतिः कृष्णपदारविन्दात्,
संदृश्यते ब्रह्मशिवादिवन्दितात् ।
भक्तेच्छयोपात्तसुचिन्त्यविग्रहात्,
अचिन्त्यशक्तैरविचिन्त्यसाशयात् ॥११

अहो दयालो स्वदयावशेन वै,
प्रपश्य मां प्रापय पादसेवने ।
यथा पुनर्मे विषयेषु माधव,
रतिर्न भूयाद्धि तथैव साधय ॥१२

त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देवदेव ॥१३

श्रीहरिव्यासदेवाचार्य विरचित—

❀ सायंकालीन संकीर्तन-स्तुति ❀

पराभक्ति रतिवर्द्धिनी, स्यामा सब सुख दैन ।
रसिक-मुकुट-मनि राधिके, जै नव-नीरज नैन ।।
जयति जै राधा रसिकमनि-मुकुट मनहरनी त्रिये ।
पराभक्ति-प्रदायनी करि कृपा करुनानिधि प्रिये ।।
जयति गोरी नवकिसोरी, सकल सुख-सीमा श्रिये ।।परा०
जयति रति-रसवर्द्धिनी, अति अद्भुता सदया हिये ।।परा०
जयति आनंद कंदनी, जग वंदनी वर-वदनिये ।।परा०
जयति स्यामा अमित नामा, वेद विधि निर्वाचिये ।।परा०
जयति रास-विलासिनी, कलकला कोटि प्रकासिये ।।परा०
जयति विविध विहार कवनी, रसिक रवनी सुभधिये ।।परा०
जयति चंचल चारु लोचनि, दिव्य दुकुला-भरनिये ।।परा०
जयति प्रेमा प्रेम सीमा, कोकिला-कलबैनिये ।।परा०
जयति कंचन दिव्य अंगी, नवल नीरज नैंनिये ।।परा०
जयति बल्लभ बल्लभा, आनंद कलभा तरुनिये ।।परा०
जयति नागरि गुन उजागरि, प्रान धन मन हरनिये ।।परा०
जयति नौतम नित्य लीला, नित्य धाम निवासिये ।।परा०
जयति गुन माधुर्य भूपा, सिद्धि रूपा शक्तिये ।।परा०
जयति शुद्ध स्वभावशीला, स्यामला सुकुमारिये ।।परा०
जयति जस जग प्रचुर परिकर, श्रीहरिप्रिया जीवन जिये०
नव नव रंग त्रिभंगिजै, स्याम सुअंगी स्याम ।
जै राधे जै हरिप्रिये, श्रीराधे सुख धाम ।।

जै राधे जै राधे राधे जै राधे जै श्री राधे ।
जै कृष्ण जै कृष्ण कृष्ण जै कृष्ण जै श्रीकृष्ण ।।
स्यामा गोरी नित्य किसोरी, प्रीतम जोरी श्रीराधे ।
रसिक रसीलो छैल छबीलो, गुण गर्वीलो श्रीकृष्ण ।।
रासविहारिनि रसविस्तारिनि, पिय उरधारिनि श्रीराधे ।
नव नवरंगी नवल त्रिभंगी स्याम सुअंगी श्रीकृष्ण ।।
प्रान पियारी रूप उजारी, अति सुकुमारी श्रीराधे ।
मैन मनोहर महा-मोदकर, सुन्दर-वरतर श्रीकृष्ण ।।
सोभा - सैनी मोभा - मैनी, कोकिल - बैनी श्रीराधे ।
कीरतिवंता कामिनीकंता, श्री भगवन्ता श्रीकृष्ण ।।
चन्दावदनी कुन्दारदनी, सोभा - सदनी श्रीराधे ।
परम उदारा प्रभा अपारा, अति सुकुमारा श्रीकृष्ण ।।
हंसा - गमनी राजत - रमनी क्रीड़ा-कमनी श्रीराधे ।
रूप-रसाला नैन-विसाला, परम-कृपाला श्रीकृष्ण ।।
कंचन-बेली रति-रस-रेली, अति अलबेली श्रीराधे ।
सब सुख-सागर सब-गुन आगर, रूप-उजागर श्रीकृष्ण ।।
रमनी-रम्या तरुतरतम्या, गुन आगम्या श्रीराधे ।
धाम-निवासी प्रभा-प्रकासी, सहज सुहासी श्रीकृष्ण ।।
शक्त्याह्लादिनि अतिप्रियवादिनि, उर-उन्मादिनि श्रीराधे ।
अंग-अंग टौना सरस सलौना, सुभग सुठौना श्रीकृष्ण ।।
राधानामिनी गुन अभिरामिनी, हरिप्रियास्वामिनि श्रीराधे ।
हरे हरे हरि, हरे हरे हरि, हरे हरे हरि श्रीकृष्ण ।।

❀ श्रीभगवत्–भागवत–संकीर्तन ❀

राधा सर्वेश्वर सुखरास, श्रीनिम्बारक श्रीहरिव्यास ।
सनक सनन्दन आदि कुमार, जयति सनातन सनतकुमार ॥
श्रीनारद मुनि परम उदार, जुगल नाम जपकरत विहार ।
राधा सर्वेश्वर सुखरास, श्रीनिम्बारक श्रीहरिव्यास ॥
श्रीरंगदेविजू हरिप्रिया पास, जुगलकिसोर सदा सुखरास ।
जै वृन्दावन जै जमुना, जै वंसीवट जै पुलिना ॥
जै जै स्यामा जै जै स्याम, जै जै श्रीवृंदावन धाम ।
श्रीहरिप्रिया सकल सुख सार, सर्व वेद को सारोद्धार ॥

षोडशाक्षरी–युगलनाम–महामन्त्र–संकीर्तन

राधे कृष्ण राधे कृष्ण कृष्ण कृष्ण राधे राधे ।
राधे स्याम राधे स्याम स्याम स्याम राधे राधे ॥

मदन गोपाल सरन तेरी आयो ।
चरन कमल की सेवा दीजै, चेरो करि राखो घर जायो ॥
धनि-धनि मात पितासुत बंधू, धनि जननी जिन गोद खिलायो ।
धनि-धनि चरन चलत तीरथको, धन गुरुजिन हरिनाम सुनायो ॥
जे नर विमुख भये गोविंद सों, जनम अनेक महा दुख पायो ।
'श्रीभट्ट' के प्रभु. दियौ अभै पद, जम डरप्यो जब दास कहायो ॥

ब्यारू— राग–कान्हरो

संग लिये सजनी पिय पियारी ।
इहि विधि घरी चार रजनी सुख,
विलसि चले दोउ करन बियारी ॥

अदन – सदन आये मन भाये,
पधराये करि सौंज तियारी ।
'श्रीहरिप्रिया' प्रवीन परस्पर दोउ,
दोऊन के जीय जियारी ।।
करत बियारी पिय प्यारी संग ।
अरस परस गरसा मुख देत-दिवावत,
अति उपजावत रति रंग ।।
मधुर दूध संमिलित मिश्रि भरि,
कनक कटोरें पीवत सोमंग ।
'श्रीहरिप्रिया' आरोगत रुचि सों,
विविध पान पकवान पुलक अंग ।।

आचमन—

अंबु अँचवावति अंबुज बदनी ।
कर लिये झारी कनक कटोरनि,
भरि–भरि प्वावति अंबुज बदनी ।।
रचि–रचि बीरी देत दोउन कर,
उर उमगावति अंबुज बदनी ।
'श्रीहरिप्रिया' चख चाहि चकित रहि,
कहि नहिं आवत अंबुज बदनी ।।

शयन आरती—

आरति वारति अलि मृगनैनी ।
निज सहचरि इच्छा अनुसारिनि,
समझि सैन की सैना-बैनी ।
जगमग जोति जगति दीपावलि,
कनक थार मधि सचित सुचैनी ।

'श्रीहरिप्रिया' हितवाय हियनि में,
लै बलाय सनमुख सुख दैनी ॥

शयन— राग-सोरठ

कुंज पधारो प्यारी रंगभरी रैन ।
रंगभरी दुलहिनि रंग भरे पिय, स्यामसुंदर सुख दैन ॥
रंगभरी सेज रची सचि सहचरि, रंग भरचौ उलहत मैन ।
'रसिक विहारी' प्यारी मिलि दोऊ, करहु सेज सुख सैन ॥

विहारिनि कीजियै सुख सैन ।
श्रमित बदन सोहै मन मोहै,झपको है नीरज नैंन ॥
अलबेली आनन्द की, हो आई अधरैन ।
'श्रीहरिप्रिया' स्वामिनि हितू, सहेलिनि की सुख दैन ॥

सुंदर सुहाई सुखदाई सुख सेज पर,
हेज भरे पौढ़े पलकें लगि गईं ।
भुज सिरहानें दियें हियसों लगाय हियें,
प्रेम रस पियें पलकें लगि गईं ॥
विपुल पुलक लस अंग आलस बस,
अरसनि परस पलकें लगि गईं ।
'श्रीहरिप्रिया' की जोरी नवलकिसोरी,
ओढ़ें पियरि पिछौरीपलकें लगि गईं।

हितू सखी हित की हितवाई ।
पांय पलोटि हरें हरें हटिकें, पट दे झट बाहरि आई ॥
रंध्रनि मग लगि रूप माधुरी, अवलोकति सहचरि समुदाई ।
'श्रीहरिप्रिया'की सहज सुरति रति,गान करति मधुरे मनभाई।

❁ श्रीनिम्बार्क भगवान् की आरती ❁

ॐ जै निम्बार्क हरे, प्रभु जय निम्बार्क हरे ।
तुम बिन और न दूजा, भव से पार करे ।।ॐ जय०।।१।।
तुम हो अगम अगोचर, करुनानिधि स्वामी ।
पूरन ब्रह्म दयालु, जग अंतरयामी ।।ॐ जय०।।२।।
भक्तन के हित कारन, लीला अवतारी ।
चक्र सुदर्शन प्रगटे ताप - त्रय हारी ।।ॐ जय०।।३।।
किन्नर गायक करते, सप्त स्वर सहिता ।
बाजत ताल मृदंगा, धिकतां तान धिकतान ।।ॐ जय०।।४।।
द्वैताद्वैत प्रचार कियो प्रभु, संतन को तारन ।
आवागमन मिटावन कलिमल अघ पावन ।।ॐ जय०।।५।।
दीन दयालु दयानिधि दीनन हितकारी ।
वेद पुरान बखानत, महिमा अति भारी ।।ॐ जय०।।६।।
निसि-दिन ध्यान धरें हित चित से दुख विनसे मन का ।
काम क्रोध मद नासे, कष्ट मिटे तन का ।।ॐ जय०।।७।।
जो जन ध्यान से आरति, प्रेम सहित गावे ।
वो 'जगदीश' परम पद, सो निश्चै पावे ।।ॐ जय०।।८।।

श्रीनिम्बार्क दीनबंधो ! सुन पुकार मेरी ।
पतितन में पतित नाथ, शरन आयो तेरी ।।
मात तात भगिनि भ्रात, परिजन समुदाई ।
सब ही संबंध त्यागि, आयो सरनाई ।।श्रीनिम्बार्क०

काम क्रोध लोभ मोह, दावानल भारी ।
निसिदिन हौं जरौं नाथ, लीजिये उबारी ।।श्रीनिम्बार्क०।।
अंबरीष भक्त जानि, रक्षा करि धाई ।
तैसे ही निज दास जानि, राखौ सरनाई ।।श्रीनिम्बार्क०।।
भक्तवछल नाम नाथ, वेदनि में गायो ।
'श्रीभट' तव चरन परस, अभै दान पायो ।।श्रीनिम्बार्क०।।

मंगल मूरति नियमानंद ।
मंगल जुगल किसोर हंस वपु, श्रीसनकादिक आनंद कंद ।।
मंगल श्रीनारद मुनि मुनिवर, मंगल निम्ब दिवाकर चंद ।
मंगल श्रीललितादिक सखीगन, हंस वंस संतन के वृंद ।।
मंगल श्री वृंदावन जमुना, तट बंसीवट निकट अनंद ।
मंगल नाम जपत जै 'श्रीभट' कटत अनेक जनम के फंद ।।

राग–कान्हरो

जुगल किसोर हमारे ठाकुर ।
सदा-सर्वदा हम जिनके हैं, जनम-जनम घर जाये चाकर ।।
चूक परे परहरै न कबही, सबही भाँति दया के आकर ।
जै 'श्रीभट' प्रगट त्रिभुवन में, प्रनतनि पोषन परम सुधाकर ।।

राग–रामकली

बसौ मेरे नैंनन में दोउ चंद ।
गौर वरन वृषभानु नंदिनी, स्याम वरन नँद नंद ।।
गोलक रहे लुभाय रूप में, निरखत आनंद कंद ।
जै 'श्रीभट्ट' प्रेम रस बंधन, क्यों छूटे दृढ़ फंद ।।

राग–गौरी

जाको मन वृंदाविपिन हरचो ।
स्यामा-स्याम स्वरूप सरोवर, परिस्वारथ विसरचो ।।
निरखि निकुंज पुंज छवि राधे, कृष्ण नाम उर धरचो ।
जै 'श्रीभट' राधे रसिक राय, ताहि सर्वस दै निवरचो ।।

राग–सारंग

ब्रजभूमि मोहनी मैं जानी ।
मोहन कुंज मोहन श्रीवृंदावन, मोहन जमुना पानी ।।
मोहनि नारि सकल गोकुल की, बोलत मोहनी बानी ।
'श्रीभट' के प्रभु मोहन नागर, मोहनि राधा रानी ।।

राग–केदार

वृन्दावन एक सुन्दर जोरी ।
खेलत जहाँ तहाँ वंसीवट, नँद नँदन वृषभानु किसोरी ।
भवन चतुर्दस की सुंदरता, सुंदर स्याम राधिका गोरी ।
जै 'श्रीभट्ट' कहाँ लो बरनौं, रसना एक नाहिं लख कोरी ।।

राग–भैरवी

रे मन वृंदाविपिन निहार ।
जद्यपि मिलै कोटि चिंतामनि, तदपि न हाथ पसार ।।
विपिन-राज सीमा के बाहर, हरि हू को न निहार ।
जै श्रीभट्ट' धूलि धूसर तन, यह आसा उर धार ।।

बसिबौ वृंदावन कौ नीकौ ।
छिन-छिन प्रति अनुराग बढ़त दिन, दरस बिहारीजी कौ ।।
नैंन श्रवन रसना अँचवत, अँग सँग प्यारी पी कौ ।
'श्रीविहारिविहारिनदास' अंग सँग, विछुरत नाहिं रती कौ ।।

राग–आसावरी

जै-जै वृंदावन रजरानी ।
जहाँ विराजत मोहन राजा, श्रीराधा सी रानी ॥
सदा सनातन इक रस जोरी, महिमा निगम न जानी ।
'श्रीहरिप्रिया' हितू निज दासी, रहति सदा अगवानी ॥

राग–हमीर

हे प्रभु अब तो मोहि सम्हारौ ।
कहौ कित भटकौं घर-घर अघहर, किंकर होय तिहारौ ॥
काम क्रोध मन लोभ प्रबल रिपु, आगे नाहिन चारौ ।
ये मोहि बोरत भवसागर में, देखत देहु न टारौ ॥
जद्यपि बहु औगुननि भरचो हौं, सब कौं लागत खारौ ॥
'वृन्दावन प्रभु' लाज सरन की, तुम कर ते जिन डारौ ।

राग-विहाग

बसी तुव मुरति नैंननि मेरे ।
कैसे चैन परे प्यारी अब, भली भाँति बिनु हेरे ॥
तनक किरकिरी खरकति सो तो, नख-सिख भूषन तेरे ।
'वृन्दावन प्रभु' नेह अंजन ते, खरकति और घनेरे ॥

राग–केदार

राधा-माधव अद्भुत जोरी ।
सदा सनातन एक रस बिहरत, अविचल नवलकिसोर किसोरी ॥
नख सिख सब सुषमा रतनागर, भरत रसिकवर हृदय सरोरी ।
जै 'श्रीभट्ट' कटक कर कुंडल, गंड वलय मिलि लसत हिलोरी ॥

श्रीमदाचार्य–परम्परा

आचार्य-नामावली	सखीस्वरूप-नाम	उत्सव-मास-तिथि
१. श्रीहंस भगवान्		कार्तिक शु० ९
२. श्रीसनकादिक भगवान्	(हरिणी आदि)	कार्तिक शु० ९
३. देवर्षि श्रीनारद भगवान्	(मुग्धादि)	मा०शी० शु० १२
४. श्रीसुदर्शनचक्रावतार जगद्गुरु श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य	(श्रीरंगदेवी)	कार्तिक शु० १५
५. श्रीश्रीनिवासाचार्यजी	(नव्यवासा)	माघ शु० ५
६. श्रीविश्वाचार्यजी	(विश्वाभा)	फाल्गुन शु० ४
७. श्रीपुरुषोत्तमाचार्यजी	(उत्तमा)	चैत्र शु० ६
८. श्रीविलासाचार्यजी	(विलासा)	वैशाख शु० ८
९. श्रीस्वरूपाचार्यजी	(सरसा)	ज्येष्ठ शु० ७
१० श्रीमाधवाचार्यजी	(मधुरा)	आषाढ़ शु० १०
११. श्रीबलभद्राचार्यजी	(भद्रा)	श्रावण शु० ३
१२. श्रीपद्माचार्यजी	(पद्मा)	भाद्र शु० १२
१३ श्रीश्यामाचार्यजी	(श्यामा)	आश्विन शु० १३
१४. श्रीगोपालाचार्यजी	(शारदा)	भाद्र शु० ११
१५. श्रीकृपाचार्यजी	(कृपालु)	मा०शी० शु० १५
१६. जाह्नवीकार श्रीदेवाचार्यजी	(देवदेवी)	माघ शु० ५
१७. सेतुकार श्रीसुन्दरभट्टाचार्यजी	(सुन्दरी)	मा०शी० शु० २
१८. श्रीपद्मनाभभट्टाचार्यजी	(पद्मालया)	वैशाख कृ० ३
१९ श्रीउपेन्द्रभट्टाचार्यजी	(इन्दिरा)	चैत्र कृ० ४
२० श्रीरामचन्द्रभट्टाचार्य	(रामा)	वैशाख कृ० ५
२१. श्रीवामनभट्टाचार्यजी	(वामा)	ज्येष्ठ कृ० ६
२२ श्रीकृष्णभट्टाचार्यजी	(कृष्णा)	आषाढ़कृ० ९
२३. श्रीपद्माकरभट्टाचार्यजी	(पद्माभा)	आषाढ़ कृ० ८
२४. श्रीश्रवणभट्टाचार्यजी	(श्रुतिरूपा)	कार्तिक कृ० ९

आचार्य-नामावली	सखीस्वरूप-नाम	उत्सव-मास-तिथि
२५. श्रीभूरिभट्टाचार्यजी	(भगवती)	आश्विन कृ० १०
२६. श्रीमाधवभट्टाचार्यजी	(माधवी)	कार्तिक कृ० ११
२७. श्रीश्यामभट्टाचार्यजी	(असिता)	चैत्र कृ० १२
२८. श्रीगोपालभट्टाचार्यजी	(गुणाकरी)	पौष कृ० ११
२९. श्रीबलभद्रभट्टाचार्यजी	(वल्लभा)	माघ कृ० १४
३०. श्रीगोपीनाथभट्टाचार्यजी	(गौराङ्गी)	श्रावण शु० ७
३१. श्रीकेशवभट्टाचार्यजी	(केशी)	चैत्र शु० १
३२. श्रीगांगलभट्टाचार्यजी	(पवित्रा)	चैत्र कृ० २
३३. श्रीकेशवकाश्मीरीभट्टाचार्यजी	(कुंकुमांगी)	ज्येष्ठ शु० ४
३४. श्री श्रीभट्टाचार्यजी	(हितू)	आश्विन शु० २
३५. श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी	(हरिप्रिया)	कार्तिक कृ० १२
३६. श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी	(परमा)	भाद्रपद कृ० ५
३७. श्रीहरिवंशदेवाचार्यजो	(हितअलबेली)	मार्गशीर्ष कृ० ७
३८. श्रीनारायणदेवाचार्यजी	(नित्यनवीना)	पौष कृ० ६
३९. श्रीवृन्दावनदेवाचार्यजी	(मनमंजरी)	भाद्र कृ० १३
४०. श्रीगोविन्ददेवाचार्यजी	(गौरांगी)	कार्तिक कृ० ५
४१. श्रीगोविन्दशरणदेवाचार्यजी	(गुणमंजरी)	कार्तिक कृ० ८
४२. श्रीसर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी	(रूपमंजरी)	पौष कृ० ६
४३. श्रीनिम्बार्कशरणदेवाचार्यजी	(रसमंजरी)	ज्येष्ठ शु० ५
४४. श्रीव्रजराजशरणदेवाचार्यजी	(प्रेमलता मं०)	ज्येष्ठ शु० ५
४५. श्रीगोपीश्वरशरणदेवाचार्यजी	(बिलासा मं०)	माघ कृ० १०
४६. श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्यजी	(शुक मं०)	आश्विन कृ० ६
४७. श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्यजी	(रति मं०)	चैत्र कृ० १३
४८. श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी विराजमान		ज्येष्ठ शु० २

❀ निम्बार्क वन्दना ❀

श्रीनिम्बार्क दीनबन्धो ! सुन पुकार मेरी ।
पतितन में पतित नाथ शरन आयो तेरी ॥

मात तात भगिनी भ्रात परिजन समुदाई ।
सब ही संबंध त्यागि आयो सरनाई ॥ श्रीनिम्बार्क० ॥

काम क्रोध लोभ मोह दावानल भारी ।
निसिदिन हौं जरौं नाथ लीजिये उबारी ॥ श्रीनिम्बार्क० ॥

अम्बरीष भक्त जानि रक्षा करि धाई ।
तैसे ही निज दास जानि राखौ सरनाई ॥ श्रीनिम्बार्क० ॥

भक्त वत्सल नाम नाथ वेदनि में गायो ।
श्रीभट तव चरन परस अभै दान पायो ॥ श्रीनिम्बार्क० ॥

ए

श्रीयुगलाराधन

जयति सततमाद्यं राधिकाकृष्णयुग्मं,
व्रतसुकृतनिदानं यत् सदैतिह्यमूलम्।
विरलसुजनगम्यं सच्चिदानन्दरूपं,
व्रजवलयविहारं नित्य वृन्दावनस्थम्।।

विविध दान–व्रत–उपवासादि सुकृत जिनकी प्रसन्नता के निमित्त किये जाते हैं, जो समस्त सत्कथाओं के मूल (केन्द्र)स्वरूप हैं, जिन्हें कोई विरले ही कृपालब्ध रसिकजन जान पाते हैं उन सच्चिदानन्द रूप व्रज--मण्डल--विहारी तथा श्रीधाम–वृन्दावन में निरन्तर विराजमान सनातन युगल श्रीराधाकृष्ण की सदा जय हो ।

कल्लोलकौ वस्तुत एकरूपकौ,
राधा मुकुन्दौ समभावभावितौ।
यद्वत् सुसम्पृक्तनिजाकृति ध्रुवा–
वाराधयामः ब्रजवासिनौ सदा।।

एक उज्ज्वल–रस–वारिधि के गौर–श्याम उभय कल्लोल रूप जो परस्पर आलिंगित तथा समान रूप से विलसित सनातन–युग्म हैं, ब्रज(वृन्दावन) में विहार करने वाले उन श्रीराधा–माधव की हम वन्दना आराधना करते हैं।

–श्रीऔदुम्बराचार्यजी महाराज

प्रकाशक सेवाः विष्णुप्रियाजी,ज्ञानदाजी आगरा

Printed at- ANUBHA 403257